जानवरों के प्रति नज़रिया और इंसानी पूर्वाग्रह

डॉ. अरविन्द गुप्ते

जर्मनी में द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले और उसके दौरान हिटलर ने यहूदियों के खिलाफ जर्मन लोगों की भावनाओं को भड़का कर लाखों की बेरहमी से हत्या कर दी थी। इस हत्याकांड पर टिप्पणी करते हुए जर्मनी के ही जाने-माने दर्शन शास्त्री और सामाजिक टिप्पणीकार थियोडोर एडोर्नो ने कहा था कि ऐसे हत्याकांड़ों की शुरुआत तब होती है जब हम किसी बूचड़खाने को देखकर यह सोचते हैं कि आखिर यहां केवल जानवरों को ही तो मार रहे हैं। उनका तर्क था कि जब किसी जाति या धर्म या रंग विशेष के लोगों को हेय दृष्टि से जानवरों के समकक्ष माना जाता है (यह सोच कर कि 'ये तो हमसे निकृष्ट हैं') तब उनके शोषण और हत्या का सिलसिला शुरू हो जाता है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, हिटलर ने यहूदियों के साथ यही किया और गोरे अमरीकियों ने अफ्रीका के निवासियों के साथ किया। सोलहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी में लाखों अफ्रीकियों को जानवरों के समान पकड़-पकड़कर अमरीका लाया गया और उन्हें गुलाम बना कर उन पर क्रूर अत्याचार किए गए। इतिहास में लगभग सभी आक्रमणकारियों ने हारे हुए देशों की जनता को गुलाम बनाया। अतः सामूहिक नरसंहार तब होते हैं जब मनुष्यों का कोई समूह अपने से इतर समूहों को अपने आप से कमतर इंसान मानने लगता है। इस प्रक्रिया में आम तौर पर मनुष्य में पाए जाने वाले नैतिक मूल्य त्याग दिए जाते हैं और नकारात्मक सोच हावी हो जाता है।

जीव शास्त्र की दृष्टि से मनुष्य भी उसी प्रकार का एक प्राणी है जैसे कोई मछली या कीड़ा या पक्षी या बकरी या गाय या भैंस है। किसी जंतु में कोई विशेषता विकसित होती है तो किसी अन्य जंतु में कोई अन्य विशेषता विकसित होती है। किंतु मनुष्य में मस्तिष्क का अधिक विकास हो जाने के कारण उसमें सोचने की क्षमता आ गई और वह अपने आप को अन्य सभी जंतुओं से श्रेष्ठ समझने लगा। चूंकि जैव विकास की अवधारणा का विकास मनुष्य ने ही किया है, उसने अपने आप को सबसे अधिक विकसित प्राणी माना है।

इसी दंभ और पूर्वाग्रह के चलते आदिम काल से ही उसने यह धारणा बना ली कि वह अन्य जंतुओं के साथ मनमाना व्यवहार कर सकता है। यह रोचक तथ्य है कि मनुष्य क्रूर व्यवहार को तो 'पाशविक व्यवहार' कहता है किंतु वह जानवरों के साथ व्यवहार करते समय खुद 'पशु' बन जाता है। बात यहीं समाप्त नहीं होती। मनुष्य दूसरे मनुष्यों के साथ भी 'पाशविक' व्यवहार करता है जबकि कोई जानवर दूसरे जानवर के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करता। इस प्रक्रिया को अमानवीकरण यानी मनुष्य द्वारा मानवीय मूल्यों को त्यागना कहा जा सकता है।

गॉर्डन हडसन कनाडा के ब्रॉक विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्रोफेसर हैं। किम्बरले कॉस्टेलो ने इसी विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। यह लेख इन्हीं दोनों वैज्ञानिकों के शोधकार्य पर प्रकाशित की गई रिपोर्ट पर आधारित है।

मनुष्य स्वभाव के बारे में उक्त अवलोकनों के संदर्भ में इन्होंने अमानवीकरण और पूर्वाग्रहों की प्रकृति को समझने के लिए दो परिकल्पनाएं विकसित कीं। पहली यह कि मनुष्य और जानवरों के बीच के भेद की (गलत) अवधारणा के कारण इतर समुदायों (जैसे अप्रवासियों और अल्पसंख्यकों) के प्रति पूर्वाग्रह पनपते हैं। दूसरी अवधारणा के अनुसार जब मनुष्य जानवरों को अपने से हीन समझता है, तो वह इतर इंसानी समुदायों को भी अमानवीकृत करके देखता है। ये दो परिकल्पनाएं उस सिद्धांत का आधार हैं जिसे हडसन व कॉस्टेलो 'अंतरप्रजाति पूर्वाग्रह' कहते हैं।

पिछले दिनों उन्होंने अमानवीकरण का स्पष्टीकरण बच्चों द्वारा प्रदर्शित पूर्वाग्रहों के संदर्भ में खोजने का प्रयास किया। इससे यह स्पष्ट निष्कर्ष निकला कि मनुष्य-जानवर रिश्तों और इतर इंसानी समूहों के प्रति पूर्वाग्रहों के बीच निश्चित सम्बंध है। इससे यह संकेत भी मिल सकते हैं कि बच्चों में इस प्रकार के पूर्वाग्रहों से निपटने के लिए कौन-सी रणनीतियां अपनाई जाएं।

हडसन व कॉस्टेलो ने 6 से 10 वर्ष के कनाडाई गोरे

बच्चों और उनके पालकों का अध्ययन किया। बच्चों को श्वेत और अश्वेत लड़के-लड़कियों तथा विभिन्न प्रकार के जानवरों के फोटो दिखाए गए। अध्ययन में शामिल बच्चों से कहा गया कि वे फोटो में दिखाए गए बच्चों का सम्बंध कुछ भावनाओं से जोड़ें - कुछ भावनाएं ऐसी थीं जो केवल मनुष्य में ही पाई जाती हैं (जैसे सहानुभूति, प्रेम, अपराधबोध, असहज होना) और कुछ ऐसी थीं जो मनुष्य के अलावा अन्य जंतुओं में भी पाई जाती हैं (जैसे खुशी, उत्तेजना, दुख, डर आदि)। उनसे यह भी कहा गया कि वे फोटो में दिखाए गए बच्चों का सम्बंध कुछ व्यक्तित्व सम्बंधी गुणों से जोड़ें। इनमें भी दो प्रकार के गुण थे - केवल मनुष्य पाए जाने वाले (जैसे जिज्ञासा, रचनात्मकता, लापरवाही, अव्यस्थित होना आदि) और मनुष्य के अलावा अन्य जंतुओं में भी पाए जाने वाले (जैसे डर, शांत स्वभाव, दोस्ताना व्यवहार, कुटिलता आदि)।

इस अध्ययन के नतीजे आश्चर्यजनक थे। इनसे सीधा निष्कर्ष यह निकल रहा था कि छोटे बच्चे अन्य बच्चों को नस्ल के आधार पर अमानवीकृत करके देखते हैं। अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि जो बच्चे मनुष्य को जानवरों से अधिक उत्कृष्ट मानते थे वे यह भी मानते थे कि अश्वेत बच्चों में कम मानवीय गुण होते हैं। अर्थात उनमें अश्वेत बच्चों के प्रति अधिक पूर्वाग्रह थे।

पालकों के साथ अध्ययन भी काफी महत्त्वपूर्ण रहा। वयस्कों के लिए विशेष रूप से बनाए गए परीक्षणों की सहायता से यह अध्ययन किया गया। नस्ल-आधारित पूर्वाग्रहों और विभिन्न नस्लीय समूहों के बीच समानता या असमानता में विश्वास की पड़ताल करने के लिए कुछ मानक परीक्षण तैयार किए गए थे। हैरानी की बात यह थी कि जो पालक सामाजिक असमानता में विश्वास करते थे उनके बच्चे मनुष्य को जानवरों से उत्कृष्ट मानते थे। जैसा कि ऊपर कहा गया है, मनुष्यों की श्रेष्ठता में इस विश्वास के चलते अमानवीकरण और नस्लीय पूर्वाग्रहों को बढ़ावा मिलता है।

इन अध्ययनों से यही निष्कर्ष निकला कि थियोडोर एडोर्नो का अनुमान एकदम सही था। इतर समूहों के अमानवीकरण का प्रमुख कारण हमारी यह मान्यता है कि हम जानवरों से अधिक उत्कृष्ट, अधिक महत्त्वपूर्ण और अधिक मूल्यवान हैं। किंतु इसका उजला पहलू यह है कि इससे हमें अमानवीकरण को कम करने के उपायों के संकेत मिलते हैं।

कई प्रयोगों में देखा गया कि जानवरों को मनुष्य के बराबरी के स्तर का दिखाने से अमानवीकरण को रोकने में सहायता मिलती है। इससे हाशिए पर स्थित समूहों के प्रति पूर्वाग्रह कम होते हैं और उनके प्रति नैतिक बोध बढ़ता है। इसके विपरीत, मनुष्य को निचले स्तर पर लाकर जानवरों के समकक्ष दिखाने से नकारात्मकता उतनी ही बढ़ती है जितनी वह मनुष्य और जानवरों के बीच अंतर को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाने से बढ़ती है।

मीडिया में जानवरों को अक्सर मनुष्य के समकक्ष दिखाया जाता है। यह एक अच्छी बात है क्योंकि इससे बच्चों का यह भ्रम कम होता है कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से जानवरों से अधिक श्रेष्ठ हैं। किंतु इससे यह प्रमाणित नहीं हुआ है कि इससे उनके अमानवीकरण या पूर्वाग्रहों में कोई अंतर आया है। संभवतः इसके लिए अधिक ठोस उपायों की आवश्यकता है। जैसे बच्चों को जानवरों के साथ अधिक घुलने-मिलने के मौके दिए जाएं।

इस तथ्य को समझना महत्त्वपूर्ण है कि यद्यपि कुछ क्षेत्रों में मनुष्य की क्षमताएं जानवरों की तुलना में बहुत अधिक होती है, किंतु यह भी सत्य है कि अन्य क्षेत्रों में जानवर मनुष्य से बहुत आगे होते हैं। केवल मनुष्य होने के कारण हमारे अधिकार अन्य जंतुओं के अधिकारों से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकते। जानवरों के अधिकारों की रक्षा करते समय हमें उसी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जो हमें गुलामों, स्त्रियों, बच्चों, आदि के अधिकारों की रक्षा करते समय करना पड़ता है। यदि हमें इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का सामना करना है तो हमें साहसपूर्वक दकियानूसी विचारों को छोड़कर उजाले की ओर बढ़ना होगा। हम अन्य जंतु प्रजातियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं इससे हमारी स्वयं की प्रजाति की सभ्यता तो झलकती ही है, इससे हम एक-दूसरे से कैसा व्यवहार करते हैं इस पर भी असर पड़ता है। ***(स्रोत फीचर्स)***